
Shri Vishvambhara Upanishat

श्रीविश्वम्भरोपनिषत्

Document Information

Text title : Shri Vishvambhara Upanishad

File name : vishvambharopaniShat.itx

Category : upanishhat, upaniShat, rAmAnanda, raama

Location : doc_upanishhat

Proofread by : Mrityunjay Pandey

Latest update : April 13, 2024

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

April 13, 2024

sanskritdocuments.org

Shri Vishvambhara Upanishat

श्रीविश्वम्भरोपनिषत्



अथ श्रीविश्वम्भर उपनिषत् ।

भाषा टीका प्रारम्भः ।

मङ्गलायणम् ।

रक्ताम्भोज दलाभि राम नयनं पीताम्भरालं कृतं
श्यामाङ्गं द्विभुजं प्रसन्न वदनं श्रीसीतया शोभितम् ।
कारुण्यामृत सागरं प्रियगणैर्भ्रात्रादिभिर्भावितं
वन्दे विष्णु शिवादि सेव्य मनिशं भक्तेश्च सिद्धिप्रदम् ॥

वात्सल्यादि गुणैः पूर्णां शृङ्गारादि रसाश्रयाम् ।
लक्ष्म्यादि सेवितां वन्दे मैथिलीं राघवप्रियाम् ॥

रामानन्दमलं वन्दे वेद वेदाङ्ग पारगम् ।

राम मन्त्र प्रदातारं सर्व लोकोपकारकम् ॥

मूल - अथ उैनं शाण्डिल्यो मडाशम्भु प्रपश्य यतो वाचो निवर्तन्ते अप्राप्य मनसा सडेत्युक्तं ब्रह्म किमस्ति
कोवा सर्वेश्वराधिपतिः निर्गुणसगुणाभ्यां परः कोवा मूर्तामूर्ताभ्याम्परः कर्ताकारयिताय कीदृश इति । अथ कैर्मन्त्रैः
संसारद्विमुख्यशुभः सधो मुक्तो भवति कोवा मन्त्राणामधिकारं समन्वेतीति ।

अर्थ - बहुत से प्रश्नोत्तर करते लुभे तदनन्तर शाण्डिल्य ऋषि ने मडाशम्भु से पूछा कि वेद भी जिनका वर्णन
प्रत्यक्ष रूप से नहीं कर सकते हैं वह ब्रह्म क्या है ? सर्वेश्वरों (अर्थात् महाविष्णु, महाब्रह्मा, मडाशम्भु सहित
सभी अवतारों) के अधिपति कौन हैं ? निर्गुण और सगुण दोनों से परे कौन हैं ? कर्ता (सबकुछ करने वाले) और
कारयिता (सभी से सबकुछ कराने वाले) वे किस प्रकार हैं ? आगे आप यह भी बताइये कि किन मन्त्रों से श्रुत
संसार से छूट कर शीघ्र मुक्त हो जाता है ? उन मन्त्रों का अधिकार किनको है ?

मूल - सडोवाच मडाशम्भुः यत्पृष्ट वांस्तस्य य नामरूपं लीलाडय धामानितु चिन्मयानि मनोवचो गोचराण्येवं तानि
स्वयं कृपातः स्फुरणं प्रयान्ति अतो रूपमनामेति प्रोक्तोयं राघवः स्वराट् तन प्रकाश भूतञ्च यस्य ब्रह्म सनातनम्
।

अर्थ - शाण्डिल्यऋषि का प्रश्न सुनकर मडाशम्भु निश्चय करके बोले कि जिसके विषय में आपने पूछा उन परमात्मा
के नाम, रूप, लीला और धाम चिन्मय (सख्खिदानन्द) हैं जो मन और वाणी से अगोचर (परे) हैं । केवल उन्हीं

की कृपा से स्वयं प्रकाशित होते हैं । एसविअे डी उन स्वराट परमात्मा “राघव” (अर्थात् रघुकुलभूषण श्री राम) जिन्हें अरूप-अनाम (अर्थात् प्राकृत नामरूप से रक्षित) कडा जाता है उन्डी के दिव्य तनु के प्रकाशभूत “सनातनब्रह्म” हैं ।

मूल - सधश्वराणां परमोमडेश्वरः पतिः पतीनां परमं य दैवतं अमूर्तं मूर्तादि शरीर कोसौ कर्ताप्य कर्ताय न प्रसंयुक्तः । व्याप्नोतिसर्वं निज तेजसायः अणोरणीयान्मडतः परस्तात् मूर्तेण सर्वं निर्माय विश्वं स्वयन्तु लीलां वितनोति नित्यां द्वयोः शरीरयोरेक्य मतोद्वैतं बुधा जगुः नःसमाव्यधिकत्वाद्वातमैद्वैतं व भाषिरे ।

अर्थ - वड श्रीराम धश्वरों के परम धश्वर हैं पतियों के पति हैं और देवताओं के परम देवता हैं । वे श्रीराम अमूर्त (निर्गुण) तथा मूर्त (सगुण) ब्रह्म के मूल शरीर अर्थात् आधार (स्रोत) हैं । और कर्ता और अकर्ता दोनों हैं और दोनों से भिन्न भी हैं । जो अपने निज तेज द्वारा सभी स्थानों पर व्याप्त हैं और सूक्ष्म से भी सूक्ष्म हैं और बड्े से भी बड्े हैं एस रूप में समस्त विश्व का निर्माण करते हैं और स्वयं रूप अर्थात् द्विभुज परात्पर नराकृति स्वरूप से साकेत में दिव्य लीला विस्तार करते हैं । विद्वान लोग दो भिन्न स्वरूप होने पर भी वस्तुतः धन में अैक्य मानते हैं ङयोङ्कि उनके समान डी कोध नडी है तो अधिक कैसे डोगा ? अस्तु विद्वानों द्वारा उन श्री राम ङु को अद्वैत ब्रह्म कडा जाता है ।

मूल- सर्वावतार लीलाञ्च करोति सगुणोयः अयोध्यायां स्वयं रामो रासमेव करोति सः सगुण निर्गुणाभ्यां परस्य परमपुरुषस्य दाशरथेर्मन्त्रस्य नाद बिन्दु वाम्नसोरगोयरौ तस्यमन्त्राश्चानन्तास्तेषु षट्शतं वरीयां सस्तेषु य त्रयो मन्त्रा अतिश्रेष्ठा ।

अर्थ - सगुण रूप में जो श्री राम विभिन्न अवतारों के रूप में लीला करते हैं और स्वयंरूप में जो श्री राम श्रीधाम अयोध्या में केवल रास करते हैं वडी सगुण-निर्गुण दोनों से परे परमपुरुष श्री दाशरथि राम का मन्त्र नादबिन्दु अर्थात् रेकृबिन्दु दोनों अक्षर मन-वचन से परे हैं । उनके अनन्त मन्त्र हैं उनमें से भी ६०० मन्त्र श्रेष्ठ हैं उनमें से भी तीन मन्त्र अतिश्रेष्ठ हैं ।

मूल - षडक्षरो द्रयाप्यं मन्त्र रत्नं युग्म मन्त्रशयेति बिन्दु पूर्वडी दीर्घाग्निततः केवलं दीर्घाग्निः ततो मायेति अथ नमैति प्रथमं श्रीमदिति ततो रामयन्त्रं यरणी विति ब्रूयादनन्तरं शरणागिति पदं पश्चात्प्रपद्ये षति वदेत् पुनश्च श्रीमते षति अथ रामयन्त्रयेति तद्ग्रे नम षति यो दाशरथेर्द्रयाप्यं मन्त्राणां प्रवरं मन्त्र रत्नमधीते स सर्वान् कामानश्नुते तेन सड मोदते षति अथ प्राणवादनन्तरं न द्वितीयाक्षरमस्तृतीयाक्षरं सी यतुर्थाक्षरं ता पञ्चमाक्षरं र षष्ठातरं म सप्तमाक्षरं ष्यामष्टमाक्षरमिति धममष्टाक्षरं विद्वान् मुक्तो भवति अेतन्मन्त्रत्रयं सर्वं मन्त्र वरं जप्त्वा सधो मुच्यते कर्म बन्धनात् यः श्रीरामेडति भक्तिमान् स अेवैतन्मन्त्राधिकारीति ।

अर्थ - षडक्षर मन्त्रराज (१) मन्त्रों में रत्न मन्त्रद्वय (२) और युगल मन्त्र (३) यड तीन मन्त्र हैं । अब मन्त्रोद्धार दिभाते हैं । बिन्दु पूर्वक दीर्घ अग्नि बीज रकार (रां) उसके बाद केवल दीर्घ अग्नि बीज र कार (रा) उसके पीछे (माय) डिर नमः अैसा सब मिलाकर “रां रामाय नमः” यड षडक्षर राम मन्त्र डुआ । अब मन्त्र द्वय दिभाते हैं प्रथम श्रीमद् उसके पीछे रामयन्त्र यरणी अैसा कडना उसके पीछे शरणं यड पड कडे और उसके पीछे प्रपद्ये अैसा कडे डिर श्रीमते कड कर रामयन्त्राय कडे उसके आगे नमः कडे सब मिलाकर “श्रीमद्रामयन्त्र यरणी शरणं प्रपद्ये

श्रीमते रामचन्द्राय नमः” यह रूप अक्षर वाला मन्त्रद्वय सब मन्त्रों में अतिश्रेष्ठ मन्त्ररत्न है। इसे जो प्राणी जपता है वह सभी कामनाओं को प्राप्त करता है और श्रीराम जे के साथ आनन्द को प्राप्त होता है। अब युगल मन्त्र का स्वरूप दिया है - ऊँकार के पीछे “न” दूसरा अक्षर “म” तीसरा अक्षर “सी” चौथा अक्षर “ता” पञ्चमाक्षर “रा” छठवां अक्षर “मा” सप्तमाक्षर “भ्यां” अष्टमाक्षर हुआ सब मिलाकर “ओं नमः सीतारामाभ्यां नमः” यह अष्टाक्षर युगल मन्त्र का जाननेवाला मुक्त होता है। इन तीनों श्रेष्ठ मन्त्रों का जप करके जेव कर्म बन्धन से शीघ्र मुक्त हो जाता है। जो श्रीराम के अनन्य भक्त हैं वही इसके परम अधिकारी हैं।

मूल - श्रीराम अेव सर्व्व कारणं तस्य रूपद्वयं परिछिन्नमपरिछिन्नं परिछिन्नं स्वरूपेण साडेत प्रमोदवने तिष्ठन् रासमेव करोति द्वितीयं स्वरूपं जगदुपत्यादेः कारणं तदक्षिणाङ्गारात्क्षीराब्धिशायी वामाङ्गाद्रमावैकुण्ठवासीति वृथात्परनारायणो वल्लूव यरणाभ्यां वदरिडोवनस्थायी शृङ्गारान्नन्दनन्दनं छति ।

अर्थ - श्रीराम ही सभी के परमकारण हैं। उन्हीं श्रीराम के दो स्वरूप हैं परिछिन्न और अपरिछिन्न। परिछिन्न स्वरूप से साडेत प्रमोदवन में सभियों के मध्य स्थित डोकर केवल रास करते हैं। द्वितीय जो अपरिछिन्न स्वरूप है वही समस्त संसार की उत्पत्ति का कारण है। उसी स्वरूप के दक्षिण अङ्ग से क्षीरसागर में शयन करने वाले नारायण प्रकट होते हैं। वाम अङ्ग से रमावैकुण्ठवासी नारायण प्रकट होते हैं। वृद्धय से परनारायण उत्पन्न होते हैं। यरणों से बद्धीवन में तपस्या करने वाले नर-नारायण उत्पन्न होते हैं। शृङ्गार से नन्दनन्दन श्रीकृष्ण उत्पन्न होते हैं।

मूल - अेवं सर्वेऽवताराः श्रीरामचन्द्रयराण रेणाभ्यः समुद्भवन्ति तथाऽनन्त कोटि विष्णुश्च यतुर्व्यूढश्च समुद्भवन्ति अेवमपराजितेश्वरमपरिमिताः परनारायणाद्यः अष्टभुजा नारायणायश्चानन्तकोटि सङ्घ्यकाः वद्भ्राञ्जलि पुटाः सर्व कावं समुपासते यदाविष्णवादीन यदाऽज्ञापयति तदा तद् ब्रह्माण्डे सर्व कार्य कुर्वन्ति ते सर्वे देवाद्विधाः भिन्नांशा अभिन्नांशाश्च श्रीरघुवरमुभये सेवन्ते भिन्नांशा ब्रह्माद्यः अभिन्नांशा नाराणाद्यः ।

अर्थ - इस प्रकार सभी अवतार श्रीरामचन्द्र के यरणों की रेणाओं से प्रकट होते हैं तथा अनन्त कोटि विष्णु और यतुर्व्यूढादि उत्पन्न होते हैं। अैसा अपराजितेश्वर (अयोध्यापति) श्रीराम का अमित प्रभाव है जिनके सामने अनन्तकोटि परनारायण, अष्टभुजा नारायणादि दोनों ढायों को जोऽे वुअे भऽे रडते हैं और नित्य उनकी उपासना करते हैं। जब जब उन असङ्ख्य ब्रह्मा विष्णु शिवादि को श्रीराम से आज्ञा मिलती है तब तब वे सब कोटि कोटि ब्रह्माण्ड का उत्पत्ति पालन संडार करते हैं। वे त्रैवेद्य दो प्रकार के हैं (१) भिन्नांश और (२) अभिन्नांश। ये दोनों श्रीरघुकुलश्रेष्ठ भगवान की सेवा करते हैं। भिन्नांश तो ब्रह्मा शिवादि देवता हैं और अभिन्नांश नारायणादिक अवतार स्वरूप हैं।

मूल - सडस्रं समाः जेवात्मनः पञ्चाङ्गोपासनां कुर्वन्ति तत आनन्दरूपा भवन्ति ततः सडेव सौम्येडमत्र आसीदिकमेवाद्वितीयं स अेक्षत बडुस्यां प्रजययेय पूर्व पञ्चाङ्गोपासकाः सृष्टि समये श्रीकृष्णोपासनां समनुष्ठाय गोलोकं प्राप्नुवन्ति तत्र केचित्तत्रैव तिष्ठन्ति केचिद्रामोपासनाऽधिकारिणो भवन्तीति विष्णवाद्युत्तमदेडे प्रविष्टो देवताऽभवत् मर्त्याद्यधम देडेषु स्थितो भजति देवताः ।

अर्थ - जेवात्मा जब सडस्रों वर्ष पर्यन्त पञ्चाङ्गोपासना (अर्थात् सूर्य गाणेश शक्ति शिव विष्णु की उपासना)

कर लेते हैं तब आनन्द रूप हो जाते हैं । छान्दोग्य उपनिषद् में वर्णित परमात्मा जो अेक है अद्वितीय है जिसने ब्रह्म हो जाने की इच्छा से मुख्य पञ्चस्वरूप ग्रहण किये । पूर्व में सृष्टि समय में यह पञ्चदेवोपासक क्रम से श्रीऋषोपासना को प्राप्त करके गोलोक की प्राप्ति करते हैं । वहां जाकर कुछ जन वही निवास करते हैं और कुछ जन श्रीरामोपासना के अधिकारी होते हैं और तदनन्तर सर्वोपरि साकेतलोक को प्राप्त करते हैं । वही परमात्मा विष्णवादि उत्तम शरीर में प्रविष्ट होने से देवता कहलाते हैं और मर्त्य लोक में रहने वाले अधम मनुष्यों के शरीर में प्रविष्ट होने से देवताओं को भजता है ।

मूल - परात्परस्य श्रीरामनाम्नः सर्वेषां नारायणादीनां नामानि भवन्ति तस्य धाम्नस्तेषां धामान्युत्पद्यन्ते तल्लीलातः सर्वेषां लीला प्रादुर्भवन्ति तत्स्वरूपात्सर्वेषां रूपाण्यविर्भवन्ति स अेवायोध्याधिपतिः सर्वकारणानामादिकारणं न तस्मात्किञ्चित्परं तत्त्वमस्तीति ।

अर्थ - परात्पर श्रीराम जो के नाम से सभी नारायणादि नाम प्रकट होते हैं । उन्हीं के धाम से सभी धाम उत्पन्न होते हैं । उन्हीं श्रीराम की दिव्य लीला से सभी अवतारों की लीला का प्रादुर्भाव होता है । उन्हीं श्रीराम के दिव्य द्विभुज परात्पर स्वरूप से सभी यतुर्भुज षड्भुज अष्टभुज दशभुज प्रभृति अनन्तभुजादिक पर्यन्त सभी भगवद्स्वरूपों का आविर्भाव होता है । वही अयोध्याधिपति भगवान् श्रीरामयन्द्र सर्व कारणों के आदिकारण हैं । उनके परे और कोई तत्त्व नहीं है अर्थात् वे ही परमतत्त्व हैं ।

मूल - अथ यन्त्रं सं लिप्यते । राम प्राप्ते मुमुक्षुभिः यन्त्रं विना न संसिद्धिर्मन्त्राणां देवतात्मनाम् । काम कोधादि दोषाणां यन्त्राणां ये न वैभवेत् । ततो यन्त्रमिति प्रोक्तं यमनाद्यन्त्रमित्यपि । षट् कोषं प्रथमं लेप्यं वृत्तं संविलिपेत्ततः । अष्टौ दलानि लेप्यानि ततस्याख्य तुरस्रकम् । सर्वैश्च लक्षाण्युक्तं दिव्यं सर्वं सुभ प्रदम् । सर्वावतार वीजैश्च वेष्टयेद्यन्त्रमुतमम् । ततश्च पूजनं कुर्याद्यन्त्रस्यैतस्य सर्वदा । तन्मध्ये व्यक्तमालेप्यं साध्य कर्म विधानतः । वीजम्पुनस्तद्विलिपेत्तत् कोडी कृत्यमान् मथम् ।

अर्थ - अब यन्त्र लिप्यते हैं । राम जो की प्राप्ति के लिये मुमुक्षुजन बिना यन्त्र पूजन किये मन्त्रात्मक देवता को सिद्ध नहीं कर सकते हैं इसलिये यन्त्र का अवश्य पूजन करना चाहिये । काम कोधादि दोषों पर यन्त्रणा (ताडना अर्थात् वश में करना) करने के कारण इसे यन्त्र कहा जाता है । अब यन्त्र बनाने - प्रथम दस त्रिकोण के षट्कोण चक्र बनाये फिर चारों ओर से गोलाकार लिपें । फिर आठ दल लिपें बारह वज्र शूल सडित सत्व रज तम रूप तीनरेषा युक्त यतुरस्रभूगुल लिपें चारों दिशाओं में चार द्वार लिपें जो सभी लक्षाओं से युक्त और सर्वसुभ प्रदान करने वाले हों । यन्त्र को सभी अवतारों के बीज से वेष्टित करें तब इस यन्त्र का सर्वदा पूजन करें । यन्त्र के मध्य में विधानपूर्वक स्पष्ट साध्य कर्म लिपे । रां वीज के ऊपर षष्ठी विभक्ति सडित साधक नाम भग लिपे और रां वीज के दोनों पार्श्व (बगल) में दस कुरु लिपे इस विधान से लिपे ।

मूल - अथ तत्पञ्च वीजानामावृत्तिं विदधीतवै । भूयो दशाक्षरोऽतद्वेष्टयेच्छुद्धं बुद्धिमान् अग्निर्कोषादि कोषेषु षडङ्गानि क्माल्लिपेत् । पुनः कोषाकपोलेषु ह्रीं श्रीं च विलिपेत्सुधीः । प्रतिकोषाग्रमालेप्यं हुं बीजं केशरेष्वय । वर्णमाला मनोभ्याता यत्वारिंशद्य सभय । वर्णां सप्त दलेष्वेवं षट् षट् पञ्चाष्टमे दले । पूर्वस्याद्वेष्टयेत्कादि वर्णैःसर्वञ्चतत्त्ववित् । लिपेद्बीजद्वयं सम्यक् नरसिंह वाराडयोः । दिग्विदुक्षुचपूर्वस्थां भूगुडैयतुरस्रकैः ।

यन्त्रमेतत्समाराध्य भुक्तिं मुक्तिंलभेत्ररः ।

अर्थ - अब उसके पीछे पाञ्च बीज अर्थात् रीं रूं रौं रः चारों ओर से लिपे । इसके पश्चात् दशाक्षर “हुं जानकी वल्लभाय स्वाहा” इस मन्त्र से शुद्ध होकर बुद्धिमान वेष्टित करे । अग्नि कोषादि छलों कोए में षडङ्गन्यास (१। रां लृटयाय नमः २। रीं शिरसे स्वाहा ३। रूं शिभायै वषट् ४। रैं क्वयाय हुं ५। रौं नेत्राभ्यां वौषट् ६। रः अस्त्राय इट्) क्रम से लिपे फिर कोए के कपोल में ह्रीं और श्रीं दोनों को बुद्धिमान लिपे । कोए के अग्रभाग में हुं बीज को लिपे और अष्टदल में वर्णमाला मन्त्र जो ४७ अक्षरों वाला है उसे लिपे । सात दल में छः छः अक्षर लिपे और आठवें दल में पाञ्च अक्षर लिपे उसको पूर्व से काटि वार्णों से अर्थात् क ङं गं घं ङं । यं छं जं ङं । टं ठं उं ढं एं । तं थं दं धं नं । पं झं बं लं मं । यं रं लं वं । शं षं सं ङं । लं क्षं षति । इन अक्षरों से तत्त्व के ज्ञाता वेष्टित करें यत्तुरस्त्र तीन भूगुड के भीतर पूर्वादिक देशों दिशा में नृसिंह बीज क्षौं और वराह बीज हुं दोनों बीज को लिपे यह यन्त्र सब प्रकार से आराधन करने योग्य है । इसके पूजन करने से मनुष्य भुक्ति (सात्त्विक भोग) और मुक्ति को प्राप्त होते हैं अब यन्त्र की दूसरी विधि लिपते हैं यथा -

मूल - मध्येऽथवा लिपेत्तारं षट् कोषेद्येपि यं क्मात् । वार्णा श्रीराम मन्त्रस्य सन्धिष्वगं यं मान्मथम् । गण्डेषु यं तथा मायां किञ्चिद्वे याविलेभनम् । पूर्ववत्तत्रपार्श्वेषु माला मन्त्रं क्माल्लिपेत् । दशाक्षरेण संवेधकादीनि विलिपेत्ततः । द्विविद्युक्षु तथा वीजे नरसिंहवाराहयोः यन्त्रान्तरमिदं साङ्गम्मावराणं विधिनार्थयेत् राजते वाथ सौवार्णो भूर्जे संलेप्य पूजयेत् ।

अर्थ - अथवा यन्त्र के मध्य से लेकर छलों कोए में क्रम से श्रीराममन्त्रों के अक्षर सङ्घित ऊँकार को लिपे । (ओं रां ओं रा ओं मा ओं य ओं न ओं मः) इस प्रकार लिपे) और (छलों कोए के सन्धि में अङ्गन्यास पूर्वक कामबीज क्लीं लिपे अर्थात् क्लींरां लृटयाय नमः । क्लींरीं शिरसे स्वाहा । क्लींरूं शिभायै वषट् । क्लींरैं क्वयाय हुं । क्लींरौं नेत्राभ्यां वौषट् । क्लींरः अस्त्राय इट्) इस प्रकार लिपे) कपोल में माया बीज औं लिपे और केशर में अर्थात् अष्टदल में पूर्व के समान ४७ अक्षर का जो वर्णमाला मन्त्र है उसे क्रम से लिपे फिर उसे दशाक्षर मन्त्र से वेष्टित करके फिर काटि अक्षरों को लिपे तथा यत्तुरस्त्र भूगुड के भीतर पूर्वादिक देशों दिशा में नृसिंह वाराह दोनों के बीज लिपे यह दूसरे प्रकार का यन्त्र में अङ्ग सङ्घित आवरणों की विधिपूर्वक अर्थना करें । यान्दी में अथवा स्वर्ण भोजपात्र में लिपकर पूजन करे ।

मूल - हुं जानकी वल्लभाय स्वाहा क्षौम् । हुं पठेत्पुनः । दशाक्षरो वाराहस्य नरसिंहस्य मनुःस्मृतः ह्रीं श्रीं क्लीं तथोन्नमो वदेत्तदनन्तरं भगवतेपदं भ्रूयात्-एति रघुनन्दनायेति पदं वदेत् ततो रक्षोघ्न विशदायेतिय मधुरे न पदं पश्चात् प्रसन्नेति ततो वदेत् वदनायेति पदं भ्रूयात्पश्चादमिततेजसेति ततोबलाय निगदेत् रामाय विष्णवे नमः ह्रीं श्रीं क्लींयो नमोभगवते रघुनन्दनाय रक्षोघ्न विशदाय मधुर प्रसन्न वदनाय अमित तेजसे बलाय रामाय विष्णवे नमः । अेषमाला मनुः प्रोक्तो नगणां चिन्ततार्थदः ।

अर्थ - “हुं जानकी वल्लभाय स्वाहा” यह दशाक्षर मन्त्र है क्षौं हुं यह दोनों नृसिंह और वाराह मन्त्र का बीज है । अब माला मन्त्र कडते हैं ह्रीं श्रीं क्लीं तथा ओं नमो कडे । तदनन्तर भगवते पद को कडना फिर रघुनन्दनाय औसा कडे तब रक्षोघ्नविशदाय कडे फिर पीछे मधुर पद कडे तब प्रसन्न औसा कडे फिर वदनाय औसा कडे पीछे अमित

तेजसे औसा कडे तब बलाय कड कर रामाय विष्णवे नमः कडे । औसा मन्त्रोद्धार लुआ । ओं नमो भगवते रघुनन्दनाय रक्षोघ्न विशदाय मधुर प्रसन्न वदनाय अमित तेजसे बलाय रामाय विष्णवे नमः यड माला मन्त्र कडा है यड मन्त्र मनुष्यों को मनोवाञ्छित हल देने वाला है ।

मूल - ॐ सीं सीतायै वदन् नमोन्तः सीता मन्त्र उदाहृतः । मन्त्रेऽस्मिन् राममाराध्य साङ्गं सावरणं तथा । आराध्य गुटिकी कृत्य धारयेद्यन्त्रमन्वडम् । सर्वं द्युष्ण प्रशमनं पुत्र पौत्र प्रदं नृणाम् । सर्वं विद्या प्रदं शश्वत् सर्वं सौष्य करं सदा । अन्याभियार कृत्येषु वज्र पञ्जरमेवलि । किं बलू क्त्या नृणाम् सर्वं सिद्धिदं शोकनाशकमिति ॥ यन्त्र सम्यक् विधानेन धारयेत्साधकोत्तमः । श्रीरामद्वार पीठाग्रे परिवारतयास्थितान् । गणेशादि सुरान् क्षेत्रपालान्-सर्वा-समर्थयेत् । स्वां तनुं शोधयित्वातः परं पूजनमाचरेत् । उपचारैः षोडशभिस्तथैकादशभिः सुधीः । पञ्चभिर्वा यजेद्देवान् स्व स्व शक्त्यनुकूलतः । सर्वं शक्ति युतं रामं साङ्गं सावरणं जपेत् । स्तूयान्त्वान् परिवारान् राम प्रीत्यर्थमादरात् । अयं यः कुरुते पूजा यन्त्र राजस्य मानवः षड् काम्यं सुभं लब्ध्वा प्रेत्य साकेतमृच्छति ।

अर्थ - सीं सीतायै कड कर अन्त में नमः कडे एसे श्रीसीतामन्त्र कडा है । एस मन्त्र में अङ्ग तथा आवरणों के सहित श्रीराम की आराधना करे । आराधना कर के उत्तम यन्त्र को गुटिका बना कर धारण करे यड यन्त्र सर्वदुःखों का नाश करने वाला है और मनुष्यों को पुत्र पौत्र की प्राप्ति कराने वाला है । सभी औषधियों को देने वाला है । अन्य मोहन, मारण, वशीकरण, उख्याटनादि कर्मों में यही वज्रपञ्जर काम देते हैं । बहुत क्या कहे यड यन्त्र मनुष्यों को सर्वसिद्धि प्रदान करने वाला है और शोकों का नाश करने वाला है । उत्तम साधन करने वाले को विधान पूर्वक यन्त्र को धारण करना चाछिये । श्रीराम के द्वारपीठ के अग्रभाग में परिवार सहित उन देवताओं (गणेश दुर्गा क्षेत्रपाल सरस्वत्यादि) को स्थित करके पूजा करे । एसके बाद अपने शरीर का शोधन करके प्रधान पूजन करे । बुद्धिमान षोडशोपचार पूजन करे तथा अेकादश प्रकार से अथवा पञ्चोपचार से पूजन करे । एसके पश्चात् सभी शक्तियों के सहित अङ्गावरणों के सहित श्रीराम जू का जप करे फिर श्रीराम जू के प्रीत्यर्थ नमस्कार करे एस प्रकार जो मनुष्य यन्त्रराज की पूजा करते हैं वड एस लोक में सभी सुखों का भोग करके मेरे साथ सर्वोपरि श्री साकेतलोक को प्राप्त होते हैं ।

मूल - अस्य श्रीराम शरणागत मन्त्रस्य श्री रामयन्द्रो ऋषिदेवी गायत्री छन्दः परमात्मा श्रीरामयन्द्रो देवता रां बीजं नमः शक्तिः सर्वाभियार्थं सिद्धये जपे विनियोगः मूले न कर शोधनं कृत्वा प्रथमं बीजं करतल करयोन्यसेत् । शेषाक्षराण्यङ्गुलि पर्वसु विन्यसेत् ।

अर्थ - एस श्रीराम शरणागत मन्त्र के श्रीरामयन्द्र ऋषि हैं, गायत्रीदेवी छन्द हैं, परमात्मा श्रीरामयन्द्र देवता हैं, रां बीज है, नमः शक्ति है, सर्व अमीष्टों की सिद्धि के लिये जप करने में विनियोग करते हैं । मूल मन्त्र से करशोधन करके प्रथम बीज को करतल कर दोनों में न्यास करे शेष सब अक्षरों को सब अङ्गुलि के पर्वों में विधि पूर्वक न्यास करे ।

मूल - श्रीमद्रामयन्द्र यरणौ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः शरणं तर्जनीभ्यां नमः प्रपद्ये मध्यमाभ्यां नमः श्रीमते अनामिकाभ्यां नमः रामयन्द्राय कनिष्ठिकाभ्यां नमः नमः करतलकर पृष्ठाभ्यां नमः श्रीरामयन्द्र यरणौ ज्ञानायलृट्टयाय नमः

शरणाभैश्वर्याय शिरसे स्वाहा प्रपद्ये शक्तये शिषायै वषट् श्रीमते बलाय कवचायतुं रामयन्द्राय तेजसे
नेत्राभ्यां वौषट् नमो बीजाय अस्त्राय हृट् श्रीरामयन्द्रयराणौ ज्ञानाय उदराय नमः शरणाभैश्वर्याय पृष्ठाय
नमः प्रपद्ये शक्तये बाहुभ्यां नमः श्रीमते बलाय उरुभ्यां नमः रामयन्द्राय तेजसे जानुभ्यां नमः नमोवीर्याय
पादाभ्यां नमः अथदेहन्यासः श्रीं नमः मन्त्रमः रां नमः मन्त्रमः यन्त्रमः द्रन्त्रमः यन्त्रमः रन्त्रमः एणौ नमः शन्त्रमः
रन्त्रमः एन्त्रमः प्रन्त्रमः पन्त्रमः धन्त्रमः श्रीनमः मन्त्रमः तेन्त्रमः रान्त्रमः मन्त्रमः यन्त्रमः द्रन्त्रमः यन्त्रमः नन्त्रमः मोन्त्रमः
अेवमुपर्य्यविन्यसेत् श्रीममूढिनमतेभालेरामनेत्रे यन्त्रनासिका यां यन्त्रोत्रे एणौ मुणेशरभुजयोः एण्डृदिप्रपस्तनयोः
धेनाभौ श्रीपृष्ठमतेज्ज्द्ययोः रामकट्यां यन्त्रा उर्वोः य जानुनि नमः पादयेः अथध्यानम् ।

जानकी सङ्घितं राममिन्द्रनील मणिप्रभम् ।

ज्ञान मुद्राधरं सर्वं भूषाभिः समलङ्कृतम् ॥

पार्श्वन्यस्त धनुर्वाणं सर्वावयव सुन्दरम् ।

राशुवलयनं ध्यायेत्सर्वाभिर्द्यै सिद्धये ॥

अर्थ - छन्द्रीलमणि के सामान कान्तियुक्त श्रीजानकी शुकु के सङ्घित ज्ञान मुद्रा धारण करने वाले सब भूषणों से
युक्त, जिनके सभी अङ्ग अतिसुन्दर हैं जैसे सब अभीष्टों की अर्थ सिद्धि करने वाले श्रीराम का ध्यान करें । तब
श्री युगलमन्त्र ओं नमः सीतारामाभ्यां ँसका जप करे । ँसके आगे अङ्गन्यासादि का विधान वर्णित करते हैं -

मूल - ॐ अङ्गुष्ठाभ्यां नमः नमः तर्जनीभ्यां नमः सीता रामाभ्यां मध्यमाभ्यां नमः ॐ अनामिकाभ्यां नमः नमः
कनिष्ठिकाभ्यां नमः सीतारामाभ्यां करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ॐ ज्ञानायलुदयाय नमः नमः अैश्वर्याय शिरसे स्वाहा
सीतारामाभ्यां शक्तये शिषायै वौषट् ॐ बलाय कवचाय तुं नमस्तेजसे नेत्राभ्यां सीतारामाभ्यां वीर्याय अस्त्राय
हृट् ध्यानं पूर्ववत् ।

अर्थ - यहाँ पर्यन्त श्री युगल मन्त्र का अङ्गन्यासादि जानना चाहिए । ँसके आगे पूर्व के सामान ही श्रीसीताराम
का ध्यान करके श्रीमन्त्रराज का जप करे ।

मूल - अस्य रामषडक्षर मन्त्रराजस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः श्री रामो देवता राम्भीजं नमः शक्तिः रामायेति
कीलकं श्री राम प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

अर्थ - ँस श्री रामषडक्षर मन्त्रराज के ऋषि ब्रह्मा हैं, छन्द गायत्री है, देवता श्री राम हैं, शक्ति नमः है, कीलकं
रामाय है, श्रीरामप्रीति के लिये जप में विनियोग करे । आगे राममन्त्रराज के अङ्गन्यासादि वर्णित करते हैं -

मूल - ॐ ब्रह्मणो ऋषयेनमः शिरशि ॐ गायत्री छन्दसे नमो मुणे ॐ रां देवतायै नमो लुटि ॐ रां बीजायनमोगुल्ये
ॐ नमः शक्तये नमः पादयोः ॐ रामाय कीलकाय नमः सर्वाङ्गे ॐ रां अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ॐ रीं तर्जनीभ्यांस्वाहा
ॐ रुं मध्यमाभ्यां वषट् ॐ रैं अनामिकाभ्यां तुं ॐ रौं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट् ॐ रः करतलकरपृष्ठाभ्यां हृट् ॐ रां
लुदयाय नमः ॐ रीं शिरसे स्वाहा ॐ रुं शिषायै वषट् ॐ रैं कवचाय तुं ॐ रौं नेत्राभ्यां वौषट् ॐ रः अस्त्राय हृट्
रां नमः ब्रह्मरन्ध्रेरां नमः भ्रुवोर्मध्ये मां नमः लुटि यं नमः नाभौ नं नमः लिङ्गे मन्त्रमः पादयोः रां नमः शिरसि रां
नमो मुणे मां नमः लुदयेय नमः नाभौ नं नमः गुल्ये मं नमः पादयोः रां नमः नाभौ रां नमः गुल्ये मां नमः पादयोः रां

नमः शिरसि नं नमः मुपे मं नमः हृदये रां नमः पादयोः रां नमः गुड्ये मां नमः । नाभौ यं नमः हृदये नं नमः मुपे मं नमः शिरसि रां नमः शिरसि रां नमः मुपे मां नमः हृदये यं नमः नाभौ नं नमः गुड्ये मं नमः पादयोः रां नमः नाभौ रां नमः गुड्ये मां नमः पादयोः यं नमः शिरसि नं नमः मुपे मं नमः हृदये रां नमः शिरसि रामाय नमः नाभौ नमो नमः पादयोः ।

अर्थ - यद्यत् श्रीराम मन्त्र का न्यास हुआ । अब देह शुद्धि और पूजानाटिक कर्म का विधान वर्णित करते हैं ।

मूल - देह शुद्धि विधायाद्यै पूजयेद्रघुनन्दनम् । पूजा द्रव्याणि संशोध्य पूजापात्राणिशोध्यते ॥ द्रव्यै सुप्रोक्षतैः सम्यक् पूजयेत् पुरुषोत्तमम् । विधिनाराधितो रामः सम्यगाराधितो भवेत् । मन्दिरे मार्जयित्वाथ देवमावाहयेद्भिर्भुम् । आवाहयित्वा देवेशं मध्ये पाद्यं तथाऽर्पयेत् ॥ मधुपर्कं ततो दद्यात्तत्स्वायम्भवेद्भिर्भुम् । सरय्यादि सलिलैर्देवं स्नापयेत्सीतयामह ॥

अर्थ - प्रथम शरीर शुद्धि करके तब श्रीरामजी की पूजा करे जिसमें पूजा द्रव्य का शोधन करके फिर पूजा पात्रों को शुद्ध करे पूजा सामग्री का सब प्रकार प्रोक्षण करके पुरुषोत्तम श्रीराम का षोडशोपचार पूजन करे । श्रीराम का विधिपूर्वक आराधन ही उनका सम्यक आराधन होता है । श्रीराम के मन्दिर का परिमार्जन करके उन श्रीराम का आवाहन करके मध्य में पाद्य अर्पण करे । फिर मधुपर्क अर्पित करे फिर प्रभु श्रीराम को सरयू प्रभृति नदियों के जल से आचमन कराये अथवा जिस नदी तीर्थादि के जल वर्तमान हों उससे ज्ञानकी ज्यु के सङ्घित प्रभु श्रीराम को स्नान कराये ।

मूल - वस्त्राणि धापयेत्सम्यक् यज्ञ सूत्रञ्च धापयेत् । अङ्ग रागं समर्प्याथ तुलसी पुष्पमालिका । समर्पयेत्ततः सर्वं भूषणैर्भूषयेद्भिर्भुम् । अङ्गाणि पूजयेत्सम्यक् ततो रामः प्रसीदति ॥ धूपं दीपञ्च नैवेद्यमारार्तिकमथार्थयेत् । पुष्पाञ्जलिमथो दद्यात्परिक्रमणमेव च ॥ प्रणमेत् शास्त्र विधिना स्तूयास्तोत्रै परात्परम् । अयं सम्पूजयेद्यस्तु सोऽमृतत्वञ्च गच्छति ॥ छंदं तु परमं गुड्यं रक्षस्यं सर्वं दुर्लभम् । रामभक्ताय दातव्यं न देयम्प्राकृतायेयेति ॥


अर्थ - सब प्रकार से वस्त्रों को और यज्ञोपवीत को धारण कराये । अङ्ग राग (सुगन्धित पदार्थ) समर्पण करे तथा तुलसीपुष्पमालिका धारण कराये तत्पश्चात् सभी आभूषणों से श्रीराम को भूषित करे और जितने अङ्ग देवता हैं उन सबका विधिपूर्वक पूजन करे तभी श्री राम प्रसन्न होते हैं । धूप, दीप, नैवेद्य और आरती यद्यत् सब अर्पण करके पुष्पाञ्जलि देकर चार परिक्रमा देते हुआ परात्पर स्तोत्रों (अर्थात् जिनमें श्री राम की परात्परता वर्णित हो) से स्तुति करके शास्त्र विधि से साष्टाङ्ग प्रणाम करे । जो इस प्रकार पूजा करते हैं वे मोक्ष (साकेतलोक) को प्राप्त होते हैं । यद्यत् रक्षस्य अत्यन्त गोपनीय है सबको अत्यन्त दुर्लभ है केवल श्रीरामभक्त को देना चाडिअये पाकृत अर्थात् जो कोई माया मोह में आसक्त है और परतत्त्व से विमुक्त है उन्हें यद्यत् रक्षस्य कदापि नहीं सुनाना चाडिअये ।


इत्यथर्वणो विश्वम्भरोपनिषत् समाप्तः ॥

यद्यत् अथर्वणीय श्रुति विश्वम्भरोपनिषद समाप्त होती है ।

इति श्रीविश्वम्भरोपनिषत् भाषा टीका सङ्घिता सम्पूर्णा ।

Encoded and proofread by Mrityunjay Pandey

——
Shri Vishvambhara Upanishat
pdf was typeset on April 13, 2024

——
Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

